दिव्य दर्शनीय स्वरूप कैसे बनें...

दिव्य दर्शनीय मूर्त बनने के तीन पुरूषार्थ

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

दूसरा, दिव्य दर्शनीय मूर्त बनने के लिए विशेष जो बाबा हम बच्चों को कहते हैं कि बाबा चाहता है कि हर बच्चे अपना अव्यक्त स्वरूप प्रत्यक्ष करें। जिस तरह से ब्रह्मा बाबा के लिए संदेशी ने बताया कि सम्पूर्ण बाबा को वतन में देखा कि बाबा ऊपर भी आपके जैसा ही बाबा हमने देखा। लेकिन बहुत लाइट-लाइट वाला था। तो बाबा ने कहा कि आप पूछ कर आओ कि वो कौन है? क्योंकि बाबा को भी ये रहस्य तब तक स्पष्ट नहीं था। तो जब संदेशी ने पूछा तो बताया कि वो मेरा पुरूषार्थी स्वरूप और मैं उसी का सम्पूर्ण स्वरूप हूँ। तब प्रत्यक्ष हुआ कि हरेक ब्राह्मण आत्मा का ये पुरूषार्थी स्वरूप है। लेकिन हम सबका भी सम्पूर्ण अव्यक्त लाइट का स्वरूप वतन में है। और इस पुरूषार्थी स्वरूप को उस स्वरूप में मर्ज होना है।

जितना-जितना हम अपने अन्दर में पुरूषार्थ करते हुए अव्यक्त स्वरूप में जैसे बाबा कहते हैं कि फरिश्ता स्वरूप अनुभव करो, तो फरिश्ता स्वरूप है ही लाइट स्वरूप। तो जब उसी स्वरूप में आप हर कर्म करेंगे कि मैं अव्यक्त स्वरूप हूँ तो चारों ओर लाइट ही लाइट महसूस होगी। हम भले ही साधारण कर्म कर रहे होंगे लेकिन स्थिति ऐसी होने के कारण सामने वाली आत्मा को वो लाइट का स्वरूप दर्शन होगा। वो दिव्य दर्शन, जिस तरह ब्रह्मा बाबा का दिव्य दर्शन होता था कि बाबा के स्वरूप के चारों ओर से लाइट-लाइट जैसे रेडिएट कर रहा है, लाइट जैसे फैला रहा है। तो उसके लिए अभ्यास चाहिए, जितना हो सके हम अव्यक्त स्वरूप में अपने आपको स्थित करें।

जितना साकार समय में या साकार दुनिया में अपने उस अव्यक्त स्वरूप को इमर्ज करते जायेंगे उतना अनेक आत्माओं को वो साक्षात्कार स्वतः होने लगेगा। ये दिव्य दर्शनीयमूर्त हैं। तो ये है दूसरा पुरुषार्थ।

तीसरा जैसे बाबा हमेशा हम बच्चों को कहते हैं कि अव्यक्त मुरलियों के बाद, हर संडे की अव्यक्त मुरलियों के बाद बाबा ड्रिल कराते हैं। अब एक सेकण्ड में अशरीरी हो जाओ। क्यों बाबा ये ड्रिल कराते हैं, क्योंकि अन्तिम घड़ी का जो पेपर है वो तो एक सेकण्ड का ही होता है। तो ये अभ्यास भी हो जाता है। दूसरा ये एक सेकण्ड में अशरीरीपन का अनुभव करने के लिए क्यों कहते हैं, अशरीरी होना माना बीज रूप होना। तो बीज स्वरूप में हम जब स्थित होंगे तो उस बीज का कनेक्शन सारे वृक्ष के साथ है। एक-एक पत्ते के साथ है। बाबा जो कहते हैं कि ये कल्प वृक्ष का पत्ता-पत्ता सूखने लगा है मुरझा रहा है क्योंकि उन्हें वो ताकत नहीं मिल रही है।

जिस तरह ब्रह्मा बाबा का दिव्य दर्शन होता था कि बाबा के स्वरूप के चारों ओर से लाइट-लाइट जैसे रेडिएट कर रहा है, लाइट जैसे फैला रहा है। तो उसके लिए अभ्यास चाहिए, जितना हो सके हम अव्यक्त स्वरूप में अपने आपको स्थित करें।

तो अब हम जितना अशरीरीपन का अभ्यास करते हुए अपने उस बीज स्वरूप में स्थित होंगे तो उस बीज के माध्यम से हम जैसे सारे वृक्ष के एक-एक पत्ते को सकाश देंगे, शक्ति देंगे, ताकत देंगे और वो आत्मायें सूखी हुई हैं, मुरझाई हुई हैं तो वो आत्मायें तरोताज़ा होने लगेंगी। तभी तो वो आपको अपना इष्ट समझेंगे, मानेंगे। इसलिए इस बीज स्वरूप द्वारा उस बीज रूप बाप की प्रत्यक्षता भी करनी है। और बीज स्वरूप में स्थित होकर एक-एक पत्तों के साथ कनेक्ट अपने आपको करना है और उनको अनुभव कराना है। तो ये तीसरा पुरूषार्थ है दिव्य दर्शनीय मूर्त बनने का।

पहला पुरूषार्थ देखा श्रृंगारी हुई मूर्त रहें, दूसरा पुरूषार्थ देखा कि अपने अव्यक्त स्वरूप को इमर्ज करना है, ज़्यादा से ज़्यादा उसको इमर्ज करते जाना है, और तीसरा बीज रूप या अशरीरीपन के अभ्यास द्वारा उस बीज स्वरूप में आकर हरेक पत्ते को सकाश देते जाना है। - क्रमशः

सेल्फ हेल्प

हम भी अपने को अर्जुन की अवस्था के रूप में देखें... तो समझ आयेगा

आपने ये देखा होगा कि महाभारत के एक एपिसोड में कि श्रीमद्भगवद् गीता केवल अर्जुन को सुनाई जा रही है। बाकी चारों भाई, नकुल, सहदेव, भीम, युद्धिष्ठर लड़ रहे थे। तो अकेले अर्जुन ने क्यों? क्या चारों को ज़रूरत नहीं थी। इसका अर्थ है कुछ हम सभी को ये समझना है कि बहुत मनुष्य इस दुनिया में ऐसे भी हैं जो वैसे तो धनुरधारी का मतलब वैसे सबकुछ बहुत अच्छा है। कैपेसिटी बहुत अच्छी है। माना हर चीज़ को जल्दी समझ लेते हैं। भांप लेते हैं, परख लेते हैं, पारंगत हैं बहुत सारी चीज़ों में लेकिन वो जहाँ पर निर्णय लेने की बात होती है ना वहाँ पर हार जाते हैं। मतलब उनके सामने कोई परिस्थिति आ जाये, बात आ जाये और देखते हैं कि इनके सामने अगर कोई अपने घर के लिए निर्णय लेना हो तो मुश्किल हो जाती है। यही अर्जुन को करते हुए दिखाया गया। अर्जुन युद्ध क्षेत्र में जब पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उनके सामने उनके चाचा, मामा, काका खड़े हैं और उनकी अपनी तरफ उनके अपने बच्चे खड़े थे। तो उनको देखकर उनके अन्दर एक थॉट, एक विचार आया कि अब अगर मैं इनके दो मारता हूँ तो ये मेरे चार मारेंगे। तो ये देखकर गार्धिव छूट जाती है। तो ये क्या दर्शाता है? ये हम सबकी मानसिक स्थिति को दर्शाता है। तो हम सबकी अवस्था ही अर्जुन की अवस्था है। आज हम सभी की कार्य करने की जो क्षमता खत्म हो गई है उसका एक मात्र कारण है अटैचमेंट, मोह, और उसी मोह को दर्शाता है अर्जुन। इसीलिए उस मोह को ठिकाने लगाने के लिए, मोह से हटाने के लिए श्रीमद्भगवद् गीता, ज्ञान सुनने और सुनाने की आवश्यकता है। जब हम अपने आप को जान लेते हैं, परमात्मा को जान लेते हैं और ये जान लेते हैं कि इस दुनिया में सभी अपनी भूमिका निभा रहे हैं, थोड़े दिन के लिए हमारे साथ हैं तो धीरे-धीरे हम मोह से छूट जाते हैं और शक्तिशाली बन जाते हैं। तो क्यों न इस कदम में अपने कदम को मिलायें।

हॉन्गकॉन्ग-कॉव्लून(चाइना)। भारतीय फिल्म उद्योग के जाने-माने अभिनेता, फोटोग्राफर और वॉयस आर्टिस्ट बोमन ईरानी ने अपनी धर्मपत्नी के साथ कॉव्लून स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र का दौरा किया। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं हॉन्गकॉन्ग में संस्थान द्वारा हो रही ईश्वरीय सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। साथ ही उन्होंने बाबा के कमरे में बैठकर ध्यान भी लगाया और अपना अनुभव सभी के साथ साझा किया।

फ्रेस्नो-कैलिफोर्निया। ब्र.कु. सिस्टर मैरी के फ्रेस्नो में आने पर सेंट पॉल कैथोलिक न्यूमैन सेंटर,फ्रेस्नो,सीए में 'द पॉवर ऑफ कम्पैशन इन ए चेंजिंग वर्ल्ड' विषयक पब्लिक प्रोग्राम का आयोजन किया जिसमें उन्होंने सभी को अपने अनुभवों एवं वक्तव्य से लाभान्वित किया। इस मौके पर ब्र.कु. सिस्टर वीणा, ब्र.कु. सिस्टर डोरीन, सिस्टर क्योको तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

डाकपत्थर-उत्तराखंड। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. आरती बहन,ऋषिकेश, कथावाचक हिमांशु गेरोला, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य।

लंडन। इंग्लैंड के विश्वविख्यात ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय पाण्डव भवन की राजयोग शिक्षिका डॉ. ब्र.कु. गीता बहन को आध्यात्मिकता के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिए लंडन ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ स्किल्स डेवलपमेंट की डायरेक्टर मिसेज़ वर्ल्ड 2022 परीन सोमानी तथा ऑक्सफोर्ड के मेयर लुबाना अर्शद द्वारा '24 प्रॉमिनेंट पर्सनालिटीज़ इन द वर्ल्ड 2024' कॉफी टेबल बुक तथा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में डॉ. ब्र.कु. गीता बहन वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किये जाने पर उन्होंने 'एम्पॉवरिंग इनफ्लाइंस एंड सेल्फ ट्रांसफॉर्मेटिव पॉवर ऑफ राजयोग मेडिटेशन इन स्पीरिचुअल एजुकेशन फॉर ग्लोबल वेल-बीइंग इन द डिजिटाइज़्ड वर्ल्ड एंड स्ट्रेस-फ्री लिविंग' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। इसके साथ ही उनका नाम गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में विश्व की सबसे मोटी पुस्तक '23 पॉज़िटिव चेंज मेकर्स' के द्वारा दर्ज़ हो गया है। तथा इंग्लैंड के विश्व प्रसिद्ध लॉर्ड्स क्रिकेट स्टेडियम में डॉ. ब्र.कु. गीता बहन को लंडन ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ स्किल्स डेवलपमेंट ने समाज के प्रति आपके उत्कृष्ट योगदान और महत्वपूर्ण प्रभाव के लिए 'इंटरनेशनल अचीवर लोड्स एक्सीलेंस अवॉर्ड' से सम्मानित किया। साथ ही आपके काम को लंडन की 'इनसाइट सक्सेस' मैगज़ीन में भी सराहा गया।

कालिम्पोंग-प.बंगाल। क्लूनी वुमेन्स कॉलेज,कालिम्पोंग में 'द सीक्रेट ऑफ हैप्पी एंड सक्सेसफुल लाइफ' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् कॉलेज की प्रिंसिपल पुष्पा माइकल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अल्का बहन।

बाढ़-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा एनटीपीसी के सीआईएसएफ कैंपस में सात दिवसीय 'राजयोग प्रशिक्षण' के दौरान ब्र.कु. ज्योति बहन, सीआईएसएफ के इंस्पेक्टर विप्लव कुमार, सीआईएसएफ के जवान तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।